INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

हिन्दी पत्रकारिता की पृष्ठभूमि, अर्थ और विविध रूप

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

Email:srsingh2472@gmail.com

शोधकर्ता **पर्यवेक्षक**

श्रीमती भुपेन्द्र कौर **डॉ मोहित मिश्रा**

सारांश–1564 ई. में पुर्तगालियों ने भारत के गोवा शहर में सबसें पहले प्रिन्टिग प्रेस की स्थापना की थी। इसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में भारत में बडे पैमाने पर प्रिन्टिग प्रेस की शुरूआत हुई, किन्तु उस समय अंग्रेजी हुकुमत होने के कारण प्रिन्टिग मुद्रण की भाषा अंग्रेजी थी। जबकि भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दी भाषा जानती थी। इसके बाद भारत के कानपुर शहर से उदन्त मार्तण्ड के प्रकाशन से हिन्दी पत्रकारिता का शुभारम्भ हुआ। इसे बाद भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और गॉधी युग से भी हिन्दी पत्रकारिता को काफी समर्थन प्राप्त हुआ। सही अर्थो में माने तो हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत भारतेन्दु युग से होती है, लेकिन उस समय भाषा की व्याकरणिक कमियॉ काफी थी जिन्हे द्विवेदी युग में सुधार किया गया। इसके बाद तो जैसे हिन्दी पत्रिकाओं की लहर सी आ गयी, एक के बाद एक हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन समय के साथ दिन प्रतिदिन बढता चला गया।

मुख्य शब्द– लोकजागरण, दायित्व–बोद्य, उदन्त मार्तण्ड, तटस्थता, रूपान्तरण

प्रस्तावना–स्वतन्त्रता से पूर्व ही उत्तर प्रदेश के पत्रों के सामने हिन्दी पत्रकारिता में आदर्श पत्रों का बोलबाला था। उनके सामने कई ऐसे पत्र थे जिनका अनुकरण करके समाचार पत्रों का प्रकाशन आरम्भ किया। सन् 1900 के आस–पास हिन्दी प्रदेशों में अच्छे पत्र निकलने लगे। पिछडे हुए प्रदेशों में इन पत्रों ने लोकजागरण का अलख जगाया, वह ऐतिहासिक महत्त्व का है। इन पत्रों ने न केवल सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के आन्दोलनों को स्वर दिया, अपितु, स्वतंत्रता संग्राम के लिए किए गए विभिन्न जन–आन्दोलनों को भी अपना योगदान दिया। काका कालेलकर ने पत्रकार परिषद में अहमदाबाद के एक अधिवेशन में "पत्रकार उस समय एक साथ लोक सेवक, लोक प्रतिनिधि, लोकनायक और लोकगुरू की भूमिका अदा कर रहे थे।"

पत्रकारिता का अर्थ–किसी विचार या संदेश को अधिकाशतः एवं सुदूर व्यक्तियों (जन–जन) तक किसी माध्यम के द्वारा प्रसारित करना ही पत्रकारिता है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व–बोद्य पैदा करना व समाज में धटित धटनाओं व उनसें सम्बन्धित विचारों से नागरिकों को अवगत कराने को ही पत्रकारिता कहा जाता है। आधुनिक समय में पत्रकारिता भ्रष्टाचार रूपी तंत्र के लिए ब्रह्मास्त्र का रूप धारण किये हुए है। पत्रकारिता को विभिन्न विद्वानों द्वारा निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया–

"पत्रकारिता के लिए जिस अग्रेंजी शब्द जर्नलिज्म का प्रयोग किया जाता ह वह जर्नल से निकला है। जिसका शाब्दिक अर्थ दैनिक होता है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता है। 17वीं एवं 18वीं सदी में पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' शब्दों का प्रयेग हुआ। जर्नल से बना जर्नलिज्म शब्द व्यापक है। समाचार प़त्रों एवं विधिक कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यो को पत्रकारिता के अन्तर्गत ही रखा जाता है। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है।"

जर्नलिज्म से पहले पत्रकारिता का शाब्दिक अर्थ–संस्कृत के शब्द 'पत्र' से माना जा सकता है। इसमें 'कृ' धातु में णिनि+तल+टाप प्रत्ययों के योग से पत्रकारिता शब्द बनता है पत्र के साथ–साथ पत्रकारिता शब्द का प्रयेग भी प्रचलन में है। "जर्नलिज्म फ्रैंच शब्द जर्नी से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है, एक–एक दिवस

का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना।" चैम्बर और न्यू वेब्स्टर्स डिक्शनरी के अनुरूप प्रकाशन, सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। "पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण सम्बन्धी कार्यो की सूची प्रस्तुत करना है।" सी.जी. मुलर सामायिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्यांकन एवं ठीक–ठीक प्रस्तुतीकरण होता है। "डॉ बद्रीनाथ कपूर–" पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार–लेख आदि एकत्रित करने, सम्पादित करने एवं प्रकाशन का आदेश आदि देने का कार्य है।" सम्पादक विखेमस्टीड–" पत्रकारिता, कला, वत्ति तथा जनसेवा है।" डॉ संजीव भानावत–"पत्रकारिता समाचारों के संकलन, चयन, विश्लेषण तथा सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते है। "डॉ अर्जुन तिवारी–भगवद्गीता में जगह–जगह पर 'शुभदृष्टि' का प्रयोग है। यह शुभदृष्टि ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है।" गांधीजी इसमें समदृष्टि को महत्व देते थे। समाजहित में सम्यक् प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। "असत्य, अशिव और असुदर पर सत्यं शिवं सुन्दरम् की शंखध्वनि ही पत्रकारिता है।" जोसेफ पुलित्जर–"उच्चादर्श युक्त, सही कहने की ईमानदार उत्सुक्ता, समस्याओं के निराकरण का यथार्थ ज्ञान और सामाजिक दायित्वपूर्ति का वास्तविक भाव ही पत्रकारिता है।" जी. बिन्नी डिब्बली–"पत्रकारिता व्यावहारिक प्रभावके तत्काल लेखन की कला है। ठीक वैसे ही जैसे कि उसी अर्थ में भाषण कला आलंकारिक है।" मैथ्यू आर्नेल्ड–"पत्रकारिता शीध्र में लिखा गया साहित्य है।" लार्ड नार्थक्लिफ–"पत्रकारिता ऐसा व्यवसाय है जिसके विषय में पत्रकार स्वयं व्यक्तिगत रूप से नही जानता, किन्तु दुसरों को उसके विषय में बताता है।" लार्ड बर्के–"सत्ता के जिस गलियारे में पत्रकार बैठते है, वह चौथा स्तम्भ बन गया है। पहले सार्वजनिक हितों की सुरक्षा की दृष्टि से कुछ राजनीतिज्ञ सरकारी रिपोर्टो का प्रकाशन खतरनाक समझते थे, अब संसद की रिपोर्टो के प्रकाशन को जनहित की दृष्टि से सुरक्षित माना जाने लगा है।" डेविड वेनराइटर–"सामयिक ज्ञान का व्यवसाय, आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति का व्यवपार तथा सावधानीपूर्वक उसे मूल्यांकन और पूर्णरूप में प्रकाशित करने के बौद्धिक कार्य को ही पत्रकारिता कहते है।" ब्रिटानिका विश्वकोष–पत्रकारिता में लेखन और संपादन चाहे वह दैनिक हो या साप्ताहिक पत्रिका (पिरियोडीकल्स) का सम्मिलित रूप है। इन्द्र विद्यावास्पति– "पत्रकारिता पाँचवा वेद है, जिसके द्वारा हम ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी बातों को जानकर अपने बंद मस्तिष्क खोलते है।" महात्मा गाँधी–"पत्रकारिता का एक मात्र उददेश्य सेवा है। प्रेस बहुत बडी शक्ति है।" रामकृष्ण रधुनाथ खाडिलकर–छपने वाले लेख, समाचार तैयार करना ही पत्रकारिता नही रह गयी है। आकर्षक शीर्षक देना, पृष्ठों की आकर्षक संरचना, शीध्र समाचार देने की होड, देश–विदेश के प्रमुख उद्योग–धंधों के विज्ञापन प्राप्त करने की चतुराई, सुन्दर छपाई और पाठक के हाथ में सबसे शीध्र पत्र पहुँचाने की तत्परता ये सब पत्रकारिता कला के अन्तर्गत आते है। डॉ. अर्जुन तिवारी–"ज्ञान और विचारों की समीक्षात्मक टिप्पणीयों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चि़त्रों के माध्यम में जन–जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।" गुलाब कोठारी–"पत्रकारिता व्यापार नही है, विधा है। अब सिर्फ पत्रकारिता का लक्ष्य केवल सूचाओं का संग्रह रह गया है। सौभाग्य की बात है कि सामाजिक, नैतिक और लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा बनी हुई है। धीरेन्द्रनाथ सिंह–"पत्रकारिता विज्ञान की देन है। विजय कुलश्रेष्ठ–समाज और समाज से पहले ज्ञान और विविध प्रकार की जानकारियाँ रखकर समाज को शिक्षित करने और मार्ग–निर्देशन की विधा का नाम ही पत्रकारिता है। जिसमें तटस्थता, स्पष्टता और मूल्यों के प्रति आस्था समाहित रहती है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी–"समग्ररूपेण पत्रकारिता व्यवसाय है कला है और राष्टीय चेतना को उददीप्त करने का सशक्त माध्यम है। जैम्स मैक्डोवाल–पत्रकारिता को मैं रणभूमि से भी बडी चीज मानता हूँ, यह कोई पेशा नही, बल्कि पेशं से भी कोई **उँ**ची चीज है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश–पत्रकार के

व्यवसाय का प्रमुख साधन है–पत्रकारिता लेखन और जन–सामान्य की स्थितियों का लेखन और संग्रह व 'जनरल्स' की सुरक्षा और संग्रहवृत्ति। प्रेमनाथ चतुर्वेदी–"पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष, मूल्यों के संदर्भ और आलोक में उपस्थित करती है। कृष्णबिहारी मिश्र–"पत्रकारिता वह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्त्तव्यों और उददेश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाये वही पत्रकारिता है। महादेवी वर्मा–पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्त्तव्य का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा। श्री प्रकाशचंद भुवालपुरी–"पत्रकार समय और समाज के संदर्भ में प्रबुद्ध रहकर जो दायित्व–बोध करता है, समाज कल्याण के लिए उसका समयोचित प्रकाश नही पत्रकारिता है। बर्टन रस्कोय–समाचार बोध वह बोध है, जिससे पता चलता है कि क्या जरूरी है, किस बात में लोग रूचि रखते हैं और यही पत्रकारिता है। ज्ञानेश उपाध्याय–"पत्रकार वह है, जो समाज की जनोपयोगी सच्चाईयों से समाज का लिखित, सम्पादित, स–स्वर, स–दृश्य साक्षात्कार करवाता है। यहाँ पत्रकार में संवाददाता और संपादकों की बिरादरी को एक साथ हटाया जा सकता है।"

पत्रकारिता मानव चेतना, भाषा, सच्चे की सम्मिलित और संतुलित प्रस्तुति है। सच्चाई+चेतना+भाषा+विधिवत संप्रेषण = पत्रकारिता। सच्चाई बयान करने के साहस के बिना पत्रकारिता संभव नही है। पत्रकारिता का जन्म चेतना के बिना नही हो सकता। भाषा न हो तो पत्रकारिता कार्य–व्यापार की कोई कल्पना नही की जा सकती। सही प्रकार से संप्रेषण की कोई विधि न हो तो पत्रकारिता को कोई अंजाम नही दिया जा सकता। भारत के पूर्व राष्टपति डॉ शंकरदयाल शर्मा–"पत्रकारिता कोई पेशा नहीं, यह जन–सेवा का माध्यम है। लोकतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने, शांति और भाईचारे की भावना बढाने में इसकी भूमिका है।" डॉ सुशीला जोशी–"पौराणिक युग में जो स्थान और महत्त्व नारद मुनि का था, वही स्थान आज के युग में समाचार पत्र का है। उस समय नारद ही आकाश–पाताल की खबरें देवताओं को दिया करते थे, आज के वही काम समाचार पत्र मनुष्यों के बीच करते है।" समाचार पत्र युग की ऊष्मा नापने का थर्मामीटर है तो वातावरण की सघनता–विरलता को अंकित करने का बैरीमीटर भी है क्योंकि समाज के परिवेश का सामाजिक तापमान इसी से जाना जाता है और वह कभी सतह पर और कभी गहराई में उतरकर अपने प्रयत्न से सिद्ध फल को सामने ले आता है और समाज को मुक्त जीवन सरिता के साथ प्रवाहित होता है। इस प्रकार समाचार पत्र अतीत के साथ–साथ वर्तमान की सूचना देता हुआ भविष्य की संभावना प्रकट करता है। इसलिए कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देने वाला 'मौसमी पक्षी' होता है।

पत्रकारिता के विविध रूप

वर्तमान समय में पत्रकारिता केवल समाचार पत्र–पत्रिकाओं तक ही सिमटी हुई नही है अपितु यह जन संचार के माध्यमों जैसे–दूरदर्शन, फिल्में, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों तक इसका विस्तार हो चुका है। आज पत्रकारिता के माध्यम से हम हम न केवल राष्ट्रीय चेतना जगाने का काम कर रहे है जो कि किसी समय (आजादी से पहले) पत्रकारिता की एकमात्र शपथ हुआ करती थी बल्कि आज पत्रकारिता के माध्यम से देश की अनेक समस्याओं, अनेक योजनाओं, राजनीतिक समीकरणों, आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित विचारों तथा विकास दर व साझा बाजार आदि का भी ध्यान पत्रकारिता द्वारा रखा जा रहा है। आज शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जो कि पत्रकारिता से बच पाया हो अन्यथा हम पत्रकारिता के माध्यम से देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति का विश्लेषण तो करते ही है इसके साथ–साथ विज्ञान का क्षेत्र, खेल का क्षेत्र, सूचना प्रोद्योगिकी का क्षेत्र व फिल्मी जगत, ग्रामीण क्षेत्र आदि सभी पर पत्रकारिता की नजर हमेशा

बनी रहती है। इसी वजह से पत्रकारिता जनता में सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, आर्थिक चेतना, धार्मिक चेतना, साहित्यिक व सांस्कृतिक चेतना तथा सूचना प्रोद्योगिकी की चेतना जाग्रत करती है।

भारत के लोग अभी तक बहुत ही सीमित दायरे तक सोचा करते थे। जिसमें भारत का मध्यम वर्ग कुछ अधिक ही सीमित था। जिसे अपने अलावा और किसी से कोई लेना देना नही था। इसलिए वह चेतन शब्द से काफी दूर था। किन्तु वर्तमान समय में पत्रकारिता के माध्यम से उसने अपने आपको सभी क्षेत्रों से जोड लिया और देश के विकास में सम्पूर्ण क्षेत्रों में अपनी विचारात्मक भागीदारी निभायी जिसकी वजह से हमारा देश आज विश्व पटल पर एक नयी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है, क्योंकि देश की निर्माणकारी प्रक्रिया में इस वर्ग ने जो कि पत्रकारिता के द्वारा चेतना जाग्रत करने पर उठ खडा हुआ या जागरूक हो गया है। उसने पत्रकारिता द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्धारण किया है।

पत्रकारिता को निम्न रूपों में बाँटा जा सकता है–साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता

1. साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता–वैसे तो साहित्य का क्षेत्र ही बहुत बडा है जिसमें भाषा, विचार, काव्य, कथा, निबंध, नाटक आदि के अनेक वर्ग उन पर चल रहे विचार–विमर्श, बहस, गोष्ठियाँ, सेमिनार, पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक वाद–विवादों, लेखकों के शिविर, यात्राएँ, भ्रमण, रिपोर्ताज, पुरस्कार, साहित्य अकादमियां एवं लेखकीय संगठन आदि अनेक क्रियाशीलताएँ साहित्यिक पत्रकारिता का विषय हैं फिर सांस्कृतिक क्षेत्र तो और भी बडा है जिसमें रंगकर्म, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य तथा क्रीडा, फिल्म, मनोरंजन आदि के विपुल रूप सांस्कृतिक गतिविधि के अंग है। उनके बारे में पाठक को रोचक और सार–सूचना जानकारी देना सांस्कृतिक पत्रकारिता का लक्ष्य है। साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता कतिपय विशिष्ट संस्कारों, अभिरूचियों और झुकाव की अपेक्षा रखती है। धार्मिक एवं जातिगत रीति–रिवाजों, खान–पान, रहन–सहन, वस्त्र विन्यास, साज–सज्जा, आवास, वस्तु प्रतिभाएँ आदि को लेकर उभरने वाली नयी–नयी प्रवृत्तियाँ और पुराने रूपों की स्मृति और परम्परा भी सांस्कृतिक पत्रकारिता का अवयव है।

भारत में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हुआ। हिन्दी में भी तभी से इसका प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता में ब्रह्म समाजियों ने सर्वप्रथम भारतीय समाज के लिए यह कार्य किया तथा बंगदूत, 'इडियन मिरर' आदि इसके उदाहरण है। कलकत्ता की तत्वबोधिनी पत्रिका प्रमुख थी। इसी श्रेणी में पूना से सुबोध पत्रिका निकली फिर बम्बई से टाइम्स ऑफ इंडिया, कलकत्त से स्टेटसमैन, इलाहबाद से पायोनियर, पटना से इंडियन नेशनल और आर्यावर्त, पुणे से केसरी और मराठा, मद्रास से स्वदेश मित्रम् और हिन्दू, बनारस से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की चन्द्रिका तथा काशी पत्रिका लेकिन हिन्दी में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता के संस्थापकों में सबसे प्रमुख है–'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।' साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'सरस्वती' मासिक पत्रिका सन् 1900 में निकली। सन् 1901 में जयपुर से 'समालोचन' निकला। सरस्वती के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी सन् 1903 से सन् 1932 तक रहे और 'समालोचन' के पहले संपादक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हुए थे।

सन् 1907 में मदनमोहन मालवीय जी ने बनारस से साप्ताहिक 'अभ्युदय' निकाला। सन् 1909 में सुन्दर लाल ने प्रयाग से कर्मयोगी पाक्षिक निकाला। इसी वर्ष लाहौर से चांद निकाला। सन् 1910 में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा 'प्रताप साप्ताहिक' निकाला गया। सन् 1911 में मासिक 'मर्यादा' का प्रकाशन काशी से हुआ। उसी वर्ष कलकत्ता से 'सनातन धर्म' मासिक तथा ज्वालापुर, हरिद्वार से 'भारतोदय' मासिक पत्रिका निकली। सन् 1913 में खंडवा से मासिक 'प्रभा' (सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी) तथा 'काशी से 'नवनीत' (स. लक्ष्मण नारायण गर्दे) पत्रिका निकली। सन् 1915 में प्रयाग से मासिक 'विज्ञान' (श्रीधर पाठक) तथा जबलपुर से मासिक 'शारदा विनोद' (स. नर्मदा मिश्र) प्रकाशित हुए। सन् 1918 में नागपुर से 'संकल्प'

(सं. डॉ. मुंजे) साप्ताहिक प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार पहले पचास वर्ष में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता बहुत फली–फूली।

यद्यपि साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रारम्भ भारत में अंग्रेजीराज की सुधार योजनाओं को सफल बनाने में सहायता के लिए हुआ था, तथा शीघ्र ही वह भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अेग बन गई। तिलक, मालवीय, बाबूराव पराडकर, रामानंद चटटोपाध्या**य,** गणेश शंकर विद्यार्थी, माधवराव सप्रे, लक्ष्मण नारायण गर्दे, काशीप्रसाद जायसवाल, माखन लाल चतुर्वेदी, पदमसिंह शर्मा आदि प्रतिभाशाली पत्रकारों ने पत्रकारिता, राजनीति, धर्म, कर्तव्य, संस्कृति समेत सम्पूर्ण जीवन की अखण्डता को पत्रकारिता में भी साकार कर दिया।

2. **विज्ञान पत्रकारिता–**आज के युग में विज्ञान एवं तकनीकी का काफी महत्व है। इसमें विज्ञान पत्रिका अपना ने पूर्ण योगदान दिया है। यह एक ऐसी कडी है जो जनता को आकर्षित करती हुई मनुष्य को विज्ञान से जाडती है। तकनीकी, द्वारा मानव ने चन्द्रमा पर अवतरण किया, मानव–रहित अन्तरिक्ष यानों की सफलता, उर्जा के साधन, पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात, मकान, वातावरण की सुरक्षा, कृषि क्षेत्र आदि सभी विषय विज्ञान से सम्बन्धित है। विज्ञान से जुडी खबरें, विचारों को इक्टठा करना, संयोजन, लेखन, सम्पादन व प्रस्तुतीकरण विज्ञान पत्रकारिता है।

हालांकि हिन्दी पत्रकारिता में विज्ञान पत्रकारिता की स्थिति बहुत ही दयनीय थी क्योंकि सर्वप्रथम उसके लिए वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकता थी। अतः इसके लिए सन् 1898 में बाबू श्याम सुन्दर दास बी.ए. की अध्यक्षता में काशी नगरी प्रचारिणी सभा ने एक समिति बनाई और 1906 में कई वैज्ञानिक पत्रिका 'विज्ञान' आयीं। जिसका प्रकाशन अप्रैल सन् 1915 में इलाहबाद (प्रयाग) की विज्ञान परिषद ने शुरू किया।

'विज्ञान' के प्रथम वर्ष के अंको में अनेक प्रकार की शैलियाँ अपनाई गई। हर अंक की शुरूआत विज्ञानमय मंगलाचरण से की जाती है। जुलाई सन् 1916 के 'विज्ञान' का यह मंगलाचरण दृष्टव्य है–

"रेल, तार, बेतार, एक्सरे, रश्मि, रेडियम,
फोटो, अनुवीक्षण, द्रुत–अनुलेखन क्रम
ज्ल–थल–नभ–पथ सुलभ सरल सर्वत्र समागम
मोटर बायस्कोप, यंत्र–समुदाय अनुपम
यह जिसका अनुसंधान–फल अथवा आविष्कार है
उस पश्चिमी विज्ञान का स्वागत सौ–सौ बार है।"

'विज्ञान' के दो सम्पादक थे–(1) लाला सीताराम और (2) पंडित श्रीधर पाठक। रोचक शैली वाले विज्ञान लेखकों में प्रो. भगवती प्रसाद श्रीवास्तव और डॉ. सत्यप्रकाश जी थे। प्रो. श्रीवास्तव का पहला वैज्ञानिक लेख कलकत्ता के 'विशाल भारत' में छपा था और उसका शीर्षक था 'विज्ञान और धर्म'। उनके ही सुझाव पर सन् 1938 में बनारस के 'साप्ताहिक आज' में विज्ञान, जगत 'स्तम्भ' शुरू किया। सन् 1940 में ज्ञानमण्डल वाराणसी से उनकी वैज्ञानिक रचनाओं का संकलन 'विज्ञान के चमत्कार' नाम से प्रकाशित हुई। डॉ. सत्यप्रकाश जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन में सन् 1944 में हिन्दी त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की थी। जो कि उत्तर प्रदेश की वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद् से आर्थिक सहायता मिलने पर जनवरी सन् 1958 में पूरी हो पाई।

स्वतंत्रता के बाद नेहरू जी की पहल पर सन् 1952 में वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आई.आर.) ने 'विज्ञान प्रगति' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका संपादन कार्य कुछ समय तक तो डॉ. ओमप्रकाश ने किया और बाद में श्री श्याम सुन्दर शर्मा जी ने किया। सन् 1969 में राजस्थान बीकानेर से 'शुचि नामक' पत्रिका भी निकाली। राष्टीय अनुसंधान विकास निगम ने सन् 1970 में 'आविष्कार' मासिक पत्रिका शुरू की,

जिसका संपादन देवेन्द्रनाथ भटनागर जी ने किया। सन् 1979 मे श्री भटनागर के सांदन में ही इस संस्था से 'ग्राम शिल्प' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

विज्ञान पत्रकारिता को दो भागों में विभाजित का दिया गया है, जिसमें–(1) कृषि विज्ञान पत्रकारिता और (2) चिकित्सा विज्ञान एवं अन्य सम्बन्धित क्षेत्र पत्रकारिता है।

(1) कृषि विज्ञान की तीन पत्रिकाएँ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद प्रकाशित करती है। 'जैसे–'खेती', 'फल–फूल' और कृषि चयनित'। खेती का प्रकाशन मई सन् 1948 में 'इण्डियन फार्मिग' के हिन्दी संस्करण के रूप में किया गया था, इसके संपादक लोकगीतों के संकलन के लिए प्रसिद्ध साहित्यकार श्री देवेन्द्र सत्यार्थी थे। 'कृषि चयनिका' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन अगस्त, सन् 1973 में एक तदर्थ पत्रिका के रूप में किया गया जिसका कृषि विज्ञान का सार–संक्षेप छपता था। सन् 1979 में यह पत्रिका नियमित रूप से निकल रही है। सन् 1979 में ही बागवानी की त्रैमासिक पत्रिका 'फल–फूल' का प्रकाशन किया जा रहा है। 'फल–फूल' एवं 'कृषि चयनिका' दोनों का संपादन डॉ. रामगोपाल चतुर्वेदी द्वारा सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन् की प्रेरणा से किया गया।

(2) चिकित्सा विज्ञान एवं अन्य सम्बन्धित क्षेत्र–चिकित्सा विज्ञान में पत्रिकाओं की संख्या बहुत है। हिन्दी में अन्वेषण संदेश, आविष्कार, ग्राम शिल्प, जूनियर साइंस, डाइजेस्ट, ब्रिटिश वैज्ञानिक एवं आर्थिक समीक्षा, विकल्प, विज्ञान गंगा, विज्ञान गरिमा, विज्ञान परिचय, विज्ञान परिषद्, अनुसंधान पत्रिका, विज्ञानपुरी, विज्ञान प्रगति, विज्ञान भारती, विज्ञान शोध भारती, वैज्ञानिक साइसं बुलेटिन, साफइन, होशंगाबाद विज्ञान आदि लोकप्रिय पत्रिकाएं रही है। लेकिनअनेक पत्रिकाओ की भीड में इडियन मेडिकल एसोसियेशन की बनारस से पत्रिका 'आपका स्वास्थ्य' प्रकाशित हुई जो अन्य पत्रिकाओ से अलग थी इसी के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन 'वर्ल्ड हैल्थ' मासिक पत्रिका का हिन्दी रूपांतर 'विश्व स्वास्थ्य' नाम से त्रैमासिक पत्रिका के रूप में दो वर्ष तक छपा। यह हिन्दी में इतनी सुन्दर और सुनियोजित थी कि अभी तक यह हिन्दी के लिए सपना है। सन् 1966 में 'युनेस्को कूरियर' का हिन्दी रूपान्तरण (संस्करण) 'यूनेस्को दूत' शुरू हुआ। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, बंबई की हिन्दी विज्ञान साहित्य परिषद ने सन् 1967 से 'वैज्ञानिक' नाम से त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। आगरा से 'विज्ञान लोक' मासिक निकाला जिसका संपादन प्रो. भगवती प्रसाद श्री वास्तव और श्री श्याम शरण अग्रवाल 'विक्रम' जी ने किया। उसके कुछ समय बाद लखनऊ के प्राणीविज्ञान आर.डी. विद्यार्थी और श्रीवास्तव जी के संपादन में 'विज्ञान जगत' मासिक पत्रिका निकाली। विज्ञान समिति उदयपुर से 'लोक विज्ञान' भी प्रेस रजिस्टार सन् 1985 की रिपोर्ट के अनुसार सन् 1984 में विज्ञान प्रगति हिन्दी मासिक सभी पत्रिकाओं में शीर्ष पर थी। हिन्दी में विज्ञान लेखकों को तीन पीढी में रखा जा सकता है–

- **पहली पीढी**–डॉ सत्यप्रकाश, जगजीत सिंह, प्रो. फूलेदेव सहाय वर्मा, प्रो. भगवती प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. गोरख प्रसाद, रामचन्द्र तिवारी, डॉ. रामगोपाल चतुर्वेदी, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा व डॉ. डी.एम. कोठारी।

- **दूसरी पीढी**–रमेश दत्त शर्मा, बुरशन पाल पाठक, कैलाश शाह, जागेन्द्र सक्सेना, डॉ. एच.एस. विश्नोई, सुचारक मूले, हरीश अग्रवाल, डॉ. शिवगोपाल मिश्र, प्रेमचंदोला, डॉ सी. एल. गर्ग, डॉ शिव प्रसाद कोष्ठा, राममूर्ति, ललित हरिशर्मा।

➢ **तीसरी पीढी**–कुलदीप शर्मा, डॉ. जगदीप सक्सेना, मनोज कुमार पाटौदिया, अरविन्द मिश्र, देवेन्द्र मेवाडी, विहण प्रताप सिंह, राजेन्द्रशर्मा, सुधीर ढौडियाल, सुभाष लखेडा, सुभाष शर्मा, चक्रेश जैन, रवीन्द्र कुमार भटनागर, प्रदीप चतुर्वेदी, अखिल कुमार सिंह, शुकदेव प्रसाद आदि।

3. धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता– भारत का संविधान धर्म निरपेक्ष संविधान है। जिस कारण प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म को अपना सकता है। जिस की वजह से प्रारम्भा से ही धर्म और आध्यात्म की पत्रिकाओं का बोल बाला रहा है। सन् 1826 मे कलकत्ता में 'उदंत मार्तण्ड' जो कि हिन्दी का पहला समाचार पत्र था जिसे श्री युगल किशोर चतुर्वेदी ने प्रकाशित किया। इस पत्र में मुख्य रूप से धर्म को महत्व दिया गया। सन् 1954 में 'विधवा विवाह' पर लेखमाला प्रकाशित की गई। सन् 1898 में कलकत्ता से 'भारत–मित्र' वैदिक धर्म का पत्र तैयार हुआ।

निष्कर्ष–हिन्दी पत्रकारिता लेखन का काम एक कला एक हुनर है, ये हुनर पाठक एवं पत्रिका दोनों को एक साथ लाता है एक दूसरे से जोडता है। जनता में समाज व राजनीतिक गतिविधियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है और समाज को नई दिशा प्रदान करके नई चेतना का निर्माण करता हैं समाज को नये उपाय बताता हैं। हिन्दी पत्रकारिता भारत के साथ–साथ विदेशों में भी तेजी के साथ अपनी जडें फैलानें में कामयाव हुई है आगे भी प्रयास जारी है। हिन्दी पत्रिकाओं के माध्यम से समाज को आगे बढने में, नया निर्माण करने में महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। वर्तमान युग में देश और विदेश दोनों हिन्दी की मॉग दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है। सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी की गूॅज सुनाई दे रही है। इसके साथ समाज को एकता के सूत्र में बाधने में मदद मिलती है। हिन्दी में पत्र–पत्रिकाओ का प्रकाशन होने से समाज के युवा वर्ग को भी रोजगार एवं नई जानकारी के अवसर प्राप्त होते है, इसलिए आज का युवा वर्ग इसमें अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है। अपने सुनहरे भविष्य को आगे ले जाने के लिए आज का युवा वर्ग हिन्दी पत्रिका से जुड रहा है। हिन्दी पत्रकारिता को आगे ले जाने के लिए बिना किसी डर के युवाओ का यह कदम सराहनीय माना जा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. तिवारी, डॉ. अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1997,
2. तिवारी, डॉ अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् 1997,
3. देवाई, डॉ. आदर्श, जनजागरण में हिन्दी पत्रकारिता, श्याम प्रकाशन, जयपुर,
4. सक्सेना, के.एस. राजस्थान में राजनीतिक चेतना और जनजागरण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर,
5. चडढा, सविता, नई पत्रकारिता और समाचार लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली सन् 1989,
6. पाटिल, डॉ. पदमा, हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप, आयाम और संभावना,
7. अनुजा, डॉ. मंगला, भारतीय पत्रकारिता : नीवं का पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, सन् 1996,
8. अगनानी, कन्हैया, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर सन् 1999,
9. गौतम, रूपचन्द्र, दलित पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 1980,
10. अनुज, डॉ मंगला, भारतीय पत्रकारिता : नीवं का पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, सन् 1996,
11. कौल, जवाहरलाल, हिन्दी पत्रकारिता का बाजारभाव, प्रभात प्रकाशन, संस्करण सन् 2000,
12. आचार्य दादृदयाल, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बीकानेर का योगदान, चेतना प्रकाशन, बीकानेर, सन् 1997
13. गोस्वामी, प्रेमचन्द, पत्रकारिता के प्रतिमान, किशोर बुक डिपो, जयपुर, सन् 1977,
14. गुप्ता, मोहन लाल, राजस्थान : जिलेवार सास्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन भाग 1. नवभारत प्रकाशन, जोधपुर, सन् 2009,

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM